प्रकाशन क्र. ...

शासकीय उपयोग हेतु

पहाड़ीकोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति का मानव शास्त्रीय अध्ययन

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
क्षेत्रीय इकाई, बिलासपुर

पहाड़ीकोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति का मानव शास्त्रीय अध्ययन

मार्गदर्शन : **डॉ. टी. राधाकृष्णन,** आई.ए.एस.
निर्देशन : **श्री बलभद्र राम,** उप संचालक
संकलन एवं लेखन : **पी. सी. लहरे**

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
क्षेत्रीय इकाई, बिलासपुर

अनुक्रमणिका

क्रं	अध्याय	विवरण	पृष्ठ क्रमाँक
1	अध्याय – एक	प्रस्तावना	1–2
2	अध्याय – दो	अध्ययन प्रविधि	3–6
3	अध्याय – तीन	पृष्ठभूमि	7–8
4	अध्याय – चार	भौतिक संस्कृति	9–12
5	अध्याय – पाँच	आर्थिक जीवन	13–19
6	अध्याय – छ	सामाजिक जीवन	20–24
7	अध्याय – सात	जीवन चक्र	25–32
8	अध्याय – आठ	राजनैतिक जीवन	33
9	अध्याय–नौ	धार्मिक जीवन	34–36
10	अध्याय– दस	लोक परंपराएँ	37–39
11	अध्याय – ग्यारह	भाषा–बोली	40–41
12	अध्याय– बारह	परिवर्तन एवं विकास	42
13	अध्याय– तेरह	समस्या	43–44

अध्याय-एक प्रस्तावना

1.0 प्रस्तावना :—

संचालक, आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान पं.दीनदयाल उपाध्याय नगर सेक्टर 4 रायपुर के आदेश क्र. / टी.आर.आई. / वा.का. / 2014 / 318 रायपुर दिनांक 02 / 05 / 2014 के द्वारा निर्धारित कार्य योजना वर्ष 2014—15 हेतु कार्य योजना बनाकर इस कार्यालय को पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति का मानव शास्त्रीय अध्ययन करने के निर्देश प्राप्त हुए है।

संचालनालय से पूर्व में मानव शास्त्रीय अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका बिंदु उपलब्ध है। उपलब्ध मार्गदर्शिका के आधार पर अध्ययन प्रतिवेदन तैयार किया गया है।

1.1 भारत में इस जनजाति की जानकारी :—

भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के लिए घोषित पहाड़ी कोरवा, बिरहोर, कमार, अबुझमाडिया व बैगा जनजातियों को विशेष पिछड़ी जनजातियां घोषित की गई है। किसी भी जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित करने के लिए उनकी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व उनकी कृषि आधारित तकनीकी ज्ञान को ध्यान में रखते हुए इन निर्धारित बिंदुओं को परीक्षण किया जाता है। इन बिंदुओं में खरा उतरने पर ही इन्हें विशेष पिछड़ी जनजाति का लाभ प्रदान किया जाता है।

1.2 अध्ययन का उद्देश्य :—

छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति की आर्थिक स्थिति राज्य स्तर में इनकी अल्प साक्षरता, कृषि क्षेत्र में इनका पिछड़ापन, वनोपज आधारित अर्थ व्यवस्था, सामाजिक पिछड़ापन तथा आर्थिक दृष्टि से अन्य जन जातियों से तुलनात्मक अध्ययन कर इस जनजाति को अन्य जनजातियों के समकक्ष लाने हेतु छत्तीसगढ़ शासन व केन्द्र सरकार प्रयासरत है।

भारत सरकार द्वारा इनके विकास के लिए पहाड़ी कोरवा विकास अभिकरण का गठन किया गया है। जो इनके विकास के लिए पूर्ण जिम्मेदार होता है।

भारत सरकार द्वारा इनके विकास के लिए करोड़ो रूपए का आबंटन उपलब्ध कराती है। इस आबंटन का उपयोग स्थानीय प्रसाशन व पहाड़ी कोरवा अभिकरण में पदस्थ परियोजना प्रशासक व स्थानीय एम.एल.ए. को सदस्य बनाकर इनके विकास हेतु कार्य योजना बनाकर कमेटी में प्रस्तुत की जाती है।

1.3 महत्व :—

पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति को भी अन्य जन जातियों की समकक्ष लाने के लिए भारत सरकार प्रयासरत है। इस हेतु भारत शासन द्वारा समय—समय पर इनके विकास हेतु कार्य योजना बनाकर कार्यन्वित करती है।

अध्याय - दो अध्ययन प्रविधि

2.0 अध्ययन क्षेत्र परिचय :–

पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा संभाग के जिला–सरगुजा, बलरामपुर व जशपुर में निवास करती है। यह जनजाति भारत के किसी अन्य प्रदेश में निवासरत नहीं पायी जाती है।

2.1 सरगुजा जिले का सामान्य परिचय :–

सरगुजा संभाग का अस्तित्व छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पूर्व से है। अविभाजित मध्यप्रदेश राज्य के समय भी इस जिले का विशेष महत्व था। चूंकि यह जिला राजाओं से संबंध रखता था। जिले में प्राचीन राजाओं में रक्सेल राजवंश का साम्राज्य था। वर्तमान में भी इस राजवंश के उत्तराधिकारी निवास कर रहे है।

सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। यह छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर से 341 कि.मी. दूरी पर स्थित है। विभाजन के पूर्व यह दूसरा सबसे बड़ा जिला माना जाता था। जिले के पश्चिम में बलरामपुर जिला पूर्व में कोरबा दक्षिण में सूरजपुर जिला स्थित है।

जिले में 07 तहसील एवं विकासखण्ड अम्बिकापुर, लखनपुर, उदयपुर, लुण्ड्रा, बतौली, सीतापुर, मैनपाट स्थित है। जिले में कुल 579 ग्राम है। सरगुजा जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 3751.04 वर्ग कि.मी. है। सुरक्षित वन क्षेत्र 455.853 वर्ग कि.मी. है। वनों में मुख्यत साल, महुआ, सागोन, आम व जलाउ वृक्ष पाये जाते है।

2.2 जिला बलरामपुर का समान्य परिचय :–

जिला बलरामपुर सरगुजा जिले को विभाजित कर नया जिला बनाया गया। इसका अस्तित्व 01 जनवरी 2012 को आया। यह जिला सरगुजा जिले के उत्तर पश्चिम में 23–60–67 उत्तर 83–62–03 पूर्व अक्षांस पर स्थित है।

जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 3806.08 वर्ग कि.मी. है। जिले में कुल 06 विकासखण्ड बलरामपुर, रामानुजगंज, राजपुर, कुसमी, शंकरगढ़ व वाड्रफनगर है।

सभी विकासखण्ड आदिवासी विकासखण्ड है।

बलरामपुर जिले की कुल जनसंख्या 598655 है। जिसमें 3,04,367 पुरूष व 294488 महिला है। प्रति हजार पुरूष के पीछे 1.03 महिला अनुपात है। ग्रामीण जनसंख्या 572249 व शहरी जनसंख्या 26606 है। जिले की जनसंख्या का घनत्व 173 प्रति वर्ग कि.मी. है।

जिले में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या 371747 है जो कुल जनसंख्या का 62.07 प्रतिशत है अनुसूचित जाति की जनसंख्या 26654 है जो कुल जनसंख्या का 4.45 प्रतिशत है।

जिले में कुल ग्राम संख्या 645 तथा 340 ग्राम पंचायत है। जिले की साक्षरता दर 60.36 प्रतिशत है जिले में 06 जनपद पंचायत, 01 नगर पंचायत व 26 पटवारी हल्का है।

जिले में 122 विद्युतीकृत ग्राम है पेयजल सुविधा 123 ग्राम में उपलब्ध है। 125 ग्राम नक्सल प्रभावित क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

बलरामपुर जिला अत्यंत पिछड़ा जिला है। जहां रेल्वे स्टेशन भी नहीं है यह संभागीय जिला मुख्यालय से 90 कि.मी. दूर है। इनकी सीमाएं झारखण्ड एवं बिहार राज्य से लगा है।

2.3 जिला जशपुर का समान्य परिचय :—

जशपुर जिला पूर्व में रायगढ़ जिले का एक हिस्सा था। वर्ष 1998 में पृथक कर नया जिला बनाया गया था। जशपुर जिला राज्य के पूर्वो भाग में स्थित है। इसकी सीमाएं पूर्व में झारखण्ड राज्य पश्चिम में बिलासपुर, उत्तर में बिहार एवं दक्षिण में उड़ीसा राज्य स्थित है।

जिले में 09 तहसील/विकासखण्ड यथा जशपुर, दुलदुला, कुनकुरी, फरसाबहार, बागबहार, पत्थलगांव, कांसाबेल, बगीचा एवं मनोरा है। जशपुर जिला आदिवासी बाहुल्य जिला है। सभी विकासखण्ड आदिवासी विकासखण्ड है।

जिले में राजस्व ग्राम 646 राजस्व एवं 11 वनग्राम इस प्रकार कुल 657 ग्राम है। जशपुर जिले की भौगोलिक क्षेत्रफल 4569 वर्ग कि.मी. है। जिसमें से 2553.63 वर्ग कि.मी. वन क्षेत्र है। 1093.706 वर्ग कि.मी. आरक्षित वन 567.750 वर्ग कि.मी. संरक्षित वन है। असीमाकिंत संरक्षित 857.125 वर्ग कि.मी. है। कृषि भूमि 291497 हेक्टेयर है जिसमें से सिंचाई 5 प्रतिशत क्षेत्र में उपलब्ध है।

जिले में मुख्यतः उरांव, कंवर, नगेशिया, कोरवा, पहाड़ी, डिहारी कोरवा, खड़िया, खैरवार, भुईया आदि जनजातियां निवासरत है। विशेष पिछड़ी जनजातियों में से पहाड़ी कोरवा व बिरहोर इसी जिले में पाये जाते है। बगीचा व मनोरा विकासखण्ड से पहाड़ी कोरवा व कुनकुरी बगीचा, दुलदुला व कांसाबेल में बिरहोर जनजाति पाये जाते है।

2.4 निवास क्षेत्र :–

तालिका क्र. 2.4 पहाड़ी कोरवा का निवास क्षेत्र की जानकारी

क्र	जिला का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम संख्या	परिवार संख्या	पहाड़ी कोरवा जनसंख्या
1	सरगुजा	अम्बिकापुर	8	141	585
2	——..——	सीतापुर	9	116	475
3	——..——	बतौली	16	318	1307
4	——..——	लखनपुर	07	97	434
5	——..——	उदयपुर	05	88	320
6	——..——	लुण्ड्रा	60	820	3416
7	——..——	मैनपाट	15	198	965
		योग	**120**	**1778**	**7502**
1	बलरामपुर	रामपुर	27	619	2867
2	——..——	कुसमी	22	359	2053
3	——..——	शंकरगढ़	42	677	3756
4	——..——	बलरामपुर	09	85	389
		योग	**100**	**1740**	**9065**
	जशपुर	मनोरा	11	119	441
1	——..——	बगीचा	72	2078	8973
2	——..——	**योग**	**83**	**2197**	**9414**
		महायोग	**303**	**5715**	**25981**

उपरोक्त आकड़े वर्ष 1991 की जनगणना व आदिम जाति अनुसंधान संस्थान द्वारा सर्वेक्षण अध्ययन प्रतिवेदन से लिया गया है। अध्ययन अनुसार राज्य में संभाग के 03 जिलों में 13 विकासखण्ड के 303 ग्रामों में 5715 परिवार निवास कर रहे है। जहां इनकी कुल जनसंख्या 25981 है।

2.5 अध्ययन क्षेत्र :–

पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा, बलरामपुर व जशपुर जिले में निवासरत है। प्रस्तुत अध्ययन जिला बलरामपुर के विकासखण्ड राजपुर, कुसमी, शंकरगढ़ व बलरामपुर विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों में किया गया है। संभाग में निवासरत पहाड़ी कोरवा ग्रामों की सूची निम्नानुसार है :–

तालिका क्र. 2.5

क्र.	जिले का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम का नाम	सर्वेक्षित पहाड़ी कोरवा परिवार संख्या
1.	बलरामपुर	राजपुर	अलखडीहा	10
	---,,---	---,,---	माकड	10
	---,,---	---,,---	लाउ	10
	---,,---	शंकरगढ़	सुगा खोली	10
	---,,---	---,,---	हरिन लेटा	10
	---,,---	---,,---	पटना	10
	---,,---	---,,---	जगिमा	10
	---,,---	---,,---	खरकोना	10
	---,,---	कुसमी	चम्पानगर	11
	---,,---	---,,---	जिगनिया	08
	---,,---	---,,---	संरगाजोगी	09
		योग	11	108

2.6 अध्ययन प्रविधि :–

पहाड़ी कोरवा का सर्वेक्षण अध्ययन करने हेतु सामुहिक साक्षात्कार, अवलोकन, व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा जानकारी संकलित किया गया। आवश्यक सामग्री संकलन हेतु पारिवारिक प्रश्नावली संस्थान स्तर से तैयार कर प्रश्नावली अनुसूची का अनुशीलन किया गया है।

अध्याय-तीन पृष्ठभूमि

पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत 05 विशेष पिछड़ी जनजाति यथा पहाड़ी कोरवा, बिरहोर, बैगा, अबुझमाड़िया, कमार, जनजातियों में से एक है। विशेष पिछड़ी जनजाति आज भी विकास की दृष्टि से अन्य जनजातियों से काफी पिछड़ा हुआ है। जिनके विकास के लिए भारत सरकार दृढ़ संकल्पित है। ताकि इन्हें समाज के मुख्य धारा में लाया जा सके। इस हेतु सरकार द्वारा पहाड़ी कोरवा विकास अभिकरण का गठन किया गया है। जिसका मुख्यालय अम्बिकापुर सरगुजा जिले में स्थित है। भारत सरकार द्वारा इन्हे राशि आबंटित कर इनके विकास हेतु योजनाएँ बनाकर उन्हे क्रियान्वित की जाती है।

3.0 जनजाति / जाति का भौगोलिक विवरण :–

पहाड़ी कोरवा विशेष पिछड़ी जनजाति का सामान्य आवास अन्य जनजातियों से अलग थलग निवास करते है। ये अन्य जनजातियो से दूर एकांत प्रिय जनजातियां है जो घने जंगलो में पहाड़ो पर निवास करते हैं। इस कारण इसे पहाड़ी कोरवा कहा जाता है। पूर्व में यह जनजाति सामान्य लोगो को देखकर छिप जाते थे तथा किसी से मिलना जूलना पसंद नही करते थे। कटे फटे पहाड़ी क्षेत्र जहां आवागमन न हो ऐसे स्थानों पर यह जनजाति रहना पसंद करती है। संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि इनका निवास क्षेत्र पहाड़ व घने जंगल है जहां अन्य जनजातियाँ निवास करना पसंद नहीं करती। पहाड़ी कोरवा जनजाति स्थान बदलकर रहते हैं। इनका मुख्य भोजन जंगली कंदमूल, फल व जंगली जानवरो का शिकार है जो इन्हे घने जंगलो में आसानी से प्राप्त होता है। अन्य भोजन के रूप में चांवल, कोदो, कुटकी है। पहाड़ी कोरवा खेती करते हैं, इसके इलावा वनोपज संग्रह, जंगल से जलाऊ लकड़ी काटकर बेचना वर्तमान में इनका मुख्य धंधा है। पहाड़ी कोरवा महिला तथा पुरूष जीवन यापन के लिए दिन में शिकार तथा कंदमूल, फल की खोज में निकाल जाते है तथा रात्रि के पहले घर वापस आ जाते है। वर्तमान में ये स्थायी कृषि की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

पहाड़ी कोरवा जनजातिः महिला–पुरूष

3.1 उत्पत्ति संबधी अवधारणाएं / इतिहास :—

पहाड़ी कोरवा की उत्पति के संबंध में विभिन्न प्रचलित भ्रांतियां है किन्तु इनके उत्पति के संबध में प्रचलित अवधारणाए इस प्रकार है। कुछ प्राचीन लोक कथाओ के अनुसार पहाड़ी कोरवा अपने को कौरवों का वंशज मानते हैं। महाभारत युद्ध में कौरवों के हार के पश्चात् कौरव सेना बिखर गई तथा हार के डर से गुफाओं में छुप के रहने लगे तथा वहीं स्थायी रूप से बस गये। पहाड़ों में निवास करने के कारण ये अपने को पहाड़ी कोरवा कहने लगे। इनमें से कुछ लोग नीचे समतल मैदान में रहने के कारण ये बाबू कोरवा (डिहारी कोरवा) कहलाने लगे।

एक अन्य प्रचलित किंवदंतियों के अनुसार प्राचीनकाल में फसलों को क्षति से बचाने के लिए फसलों के बीच लोग मानव ढांचा (मनुष्य की आकृति) खड़ा कर देते थे जिसमें जानवर फसलों को नुकसान नहीं पहुंचाते थे। संयोग वंश एक दिन शंकर पार्वती जी घुमते हुए उधर से निकले। माता पार्वती की नजर मानव ढाचें पर पड़ी तब पार्वती ने शंकर जी से बिनती की इस पर जान डाल दी जाए व उसे जीवित कर दी जाए। शंकर भगवान सहमत हो गये व उस ढाचें में जान डाल दी। जान डालने पर पुतला जीवित मानव के रूप में बदल गया। उसे जीवित देख शंकर जी उसको पास बुलाये तथा उसे अपने कोख (गोद) में बिठा लिया। भगवान शंकर ने कहा तुम मेरे कोख में बैठे हो इसलिए आज से तुम्हारा नाम कोरवा होगा और तुम इसी नाम से जाने जावोगे।

3.2 शारीरिक बनावट :—

पहाड़ी कोरवा का रंग एक दम काला है। चेहरे चपटा व नाक फैली हुई चपटी होती है। बाल का रंग काला व घुघराले होते है। पहाड़ी कोरवा 4.5 फीट से 5.5 के लगभग छोटे कद के होते है। बदन गढीला व दुबले लेकिन मजबूत होते है।

अध्याय-चार भौतिक संस्कृति

4.0 ग्राम का आकार व बसाहट :—

पहाड़ी कोरवा दूर पहाड़ों में निवास करते है तथा दूर—दूर बसते है। एक पहाड़ी कोरवा से दूसरे पहाड़ी कोरवा का घर सामान्यतः दिखाई नहीं पड़ता। ये लोग बार—बार आवास बदलते रहते है। ये लोग अन्य जनजातियों से भी अलग—अलग निवास करते है। इनकी बसाहट विरल होती है।

4.1 घर की बनावट :—

पहाड़ी कोरवा का घर सामान्यतः एक कमरे का बना होता है। घर की लम्बाई 15 बाई 12 फीट के लगभग बना होता है। इसी कमरे में रसोई व शयन कक्ष दोनों होता है। रसोई स्थान में चुल्हा व खाने पीने का बर्तन रखा रहता है। एक कोने में अनाज रखने की काठी होती है। जो 3—4 फीट गोलाकार एवं 3—4 फीट ऊंची होती है। उसी में अनाज या महुआ रखते है। घर का निर्माण कच्ची मिट्टी से करते है। घर 6—7 फीट ऊंचा होता है। जिसमें छत लकड़ी का बना होता है। जिसमें ऊपर घास फूस डला रहता है। कुछ लोंगों का छत खपरैल युक्त होता है। घर की छबाई मिट्टी से करते है। लिपाई पुताई गोबर या स्थानीय मिट्टी से करते है। घर की साफ सफाई पर विशेष ध्यान नहीं देते है।

4.2 घरेलु उपकरण :—

पहाड़ी कोरवा के पास घरेलु उपकरण के रूप में कोई विशेष सामान नहीं होता है। पहाड़ी कोरवा विपन्नता की जीवन जीते है। जिसके कारण उनके पास दैनिक उपयोग की सीमित वस्तुए उपलब्ध रहती है। उनके द्वारा पानी पीने के लिए गिलास, भोजन पकाने के लिए मिट्टी तथा एल्यूमिनियम के बर्तन प्रयोग में लाए जाते है। डेगचीं, कडाही व करछुल खाने के लिए बर्तन या दोने पत्तल का उपयोग करते है। कुछ पहाड़ी कोरवा अन्य जनजातियों के सम्पर्क में आने के कारण स्टील व कांसे के बर्तन का उपयोग भी करने लगे है। चुल्हा मिट्टी से बनाए जाते है। कुछ लोग आंगन

में गढ्ढा खोदकर बनाते है जो बरसात के बाद अन्य मौसम में उपयोग में लाते है। इनके घर में सील–लोढ़ा, चक्की का उपयोग नहीं होता है। बैठने के लिए चौरा घर के सामने बना देते है। प्रकाश के लिए लकड़ी जलाकर या चिमनी का उपयोग किया जाता है।

4.3 कृषि उपकरण :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग पूर्व में बेवर कृषि करते थे वर्तमान में भी ये कृषि के आधुनिक तरीकों का उपयोग नहीं करते है। अभी भी पुरानी कृषि तकनीक का उपयोग करते है। खेती के लिए ढालु स्थान साफ कर बीच का छिडकाव कर देते है। पहाड़ी कोरवा जाति के लोग एक स्थान पर रहना पसंद नहीं करते इनका आवास लगातार बदलते रहता है। वर्तमान में अधिकांश पहाड़ी कोरवा वन भूमि पर बेजा कब्जा किये है। कुछ लोगों को भूमि पट्टे पर प्रदान की गई है कृषि में धान, कुटकी, कोदो, मक्का, उड़द आदि अनाज उगाते है। सब्जियों में कुम्हड़ा, खीरा, आदि उगाते है। कृषि औजार के रूप में हसियां, गैती, फावड़ा, सब्बल, टांगा, सिकद, कांवर आदि कृषि औजारों का प्रयोग करते है।

प्राचीन समय में पहाड़ी कोरवा जंगलों में पाये जाने वाले जंगली जानवर जैसे, हिरण, सुअर, गिलहरी, चिड़िया आदि का शिकार करते थे। शिकार के लिए प्रमुख औजार तीर धनुष का प्रयोग करते है। इसके अलावा बलवा (फरसा/भाला) का प्रयोग करते है। पहाड़ी कोरवा तीर चालने के लिए अंगुठे का प्रयोग नहीं करते है। अंगुठे के पश्चात दो अंगुलियों से तीर चलाते है। ऐसी मान्यता है कि राम–लक्ष्मण वन में घुमते हुए उनके पास आए एवं दाहिने हाथ का अंगुठा काट लिए और उनसे तीर छोड़ने को कहा। कोरवा लोग दो अंगुलियों से ही तीर चलाकर दिखा दिए तब से पहाड़ी कोरवा तीर चलाने में अंगुठे का प्रयोग नहीं करते है। कुछ किंवदतियों के अनुसार पहाड़ी कोरवा अपने को एकलव्य का संतान मानते है उनकी मान्यता के कारण कारण वे भी तीर संचालन में अंगुठे का प्रयोग नहीं करते है।

ढ़ेकी–अनाज कुटने का कार्य किया जाता है

गुलेल – छोटे पशु पक्षीयों के शिकार में उपयोग

मत्याखेट के लिए भी पूर्व में तीर धनुष का उपयोग करते थे वर्तमान में वे जाल या मच्छरदानी के फटे टुकड़े का प्रयोग मत्स्याखेट में करते है। कुछ लोग चोरिया का प्रयोग भी मछली पकड़ने में करते है।

गिलहरी व चिडिया मारने के लिए विशेष प्रकार के तीर का प्रयोग करते है। तीर के सामने वाले हिस्से में लकड़ी का गुटका फसाकर रखते है। जिसमें तीर शिकार को घायल कर नीचे गिरा देती है व तीर भी वही गिर जाता है।

पहाड़ी कोरवा संगीत के लिए मांदर का उपयोग करते है। पहाड़ी कोरवा लोग पहाड़ी क्षेत्रों में रहते है। जहां आवागमन का साधन पैदल होता है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण अन्य वाहनों से इन तक पहुच पाना कठिन होता है। पहाड़ी कोरवा आग जलाने के लिए पूर्व में चकमक पत्थर का उपयोग करते थे किंतु वर्तमान में वे माचिस का प्रयोग करने लगें है कुछ लोग अलाव जलाकर रखते है उसी से सुबह शाम आग प्राप्त करते है।

4.4 वस्त्र विन्यास :—

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग पूर्व में केवल लंगोट धारण करते थे शेष शरीर खुला रहता था। महिलाएं केवल साड़ी लपेटती थी ब्लाउज का प्रचलन नहीं था। किंतु आज समय के साथ कोरवा लोगों में पुरूष धोती, कुर्ता गमछा, कच्चछा के रूप में कपड़े का उपयोग करने लगे है।

महिलाएं प्रायः आज साड़ी ब्लाउज पहनती है। कोरवा महिलाएं विशेष समय में विशेष वस्त्र पहनने का प्रचलन नहीं है जिसका कारण है आर्थिक संसाधन समुचित रूप से उपलब्ध नहीं हो पाना है।

4.5 स्वच्छता एवं सफाई :—

पहाड़ी कोरवा लोग साफ सफाई का विशेष ध्यान नहीं रखते है। ये लोग रोज स्नान भी नहीं करते/नहाने के समय नदी किनारे मिट्टी से शरीर को रगडते है। सिर की सफाई भी मिट्टी से करते है। महिलाएं भी नहाने के लिए मिट्टी को रगडकर

शरीर की सफाई करते है। वस्त्र को राख से सफाई करते है। वर्तमान में निरमा, सोडा आदि का आंशिक रूप से उपयोग करते है। गांव की सफाई के लिए कुछ नहीं किया जाता इनका पारा टोला के रूप में रहता है। जिसमें घर एक दूसरे से दूर रहता है। जहां इनका घर दिखाई नहीं पड़ता है नाली नहीं होने के कारण गंदगी भी नहीं रहती है।

4.6 शारीरिक साज श्रृंगार :–

पहाड़ी कोरवा महिला पुरूष ज्यादा साज श्रृंगार नहीं करते है चूकि इनके पास आर्थिक संसाधन सीमित होता है। महिलाएं श्रृंगार के रूप में गुदना गुदवाती है जिसमें सूरज, चांद, सांप, बिच्छु, वृक्ष, फल, फूल, आदि हाथ बाह कलाई व सीने में गुदवाती है। नाक, कान, छिदवाती है। जिसमें लकड़ी के टुकडे या गिलट के गहने पहनती है। बाल में तेल डालकर कंघा करती है कानो व गले को फूलों से सजाती है जो फूल जंगली होते है। कान में तरकी तरका (कर्णफूल) गले में गिलट की हसिया, कोसा, चंदवा, कनी एवं लाल गुटियों की माला, हडिडयों की माला गुंजफल, हाथ में कंखना (कंगन) पछवा अंगुठी एवं गिलट की चूडिया कमर में करधनी पैर में झरिया एवं पैरी पहनती है। गोदना के संबंध में धारणा यह रहती है। कि यह मरने पर भी साथ जाती है।

अध्याय-पांच आर्थिक जीवन

पहाड़ी कोरवाओं का जीवन विपन्नता से भरी होती है। इनका कोई विशेष आर्थिक संसाधन नहीं होती है। इनकी आवश्यकताएं भी सीमित होती है। पहाडों पर रहने के कारण अन्य विलासिता की वस्तुओं से दूर रहते है।

5.0 वनाश्रित अर्थव्यवस्था :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति की अर्थ व्यवस्था वनों पर आधारित अर्थव्यवस्था है इसलिए ये अपना आवास घने जंगलों के अन्दर बनाते है। जहां इनके खाने के लिए कंद, मूल, फल–फूल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो तथा घने जंगलों में शिकार हेतु वन्य पशु पक्षी उपलब्ध होते हैं घने जंगलों में कंद मूल भाजी का संग्रहण महिला पुरूष व बच्चें सब मिलकर करते है। वनोपज संग्रहण में महुआ, तेंदूपत्ता, साल पत्ता, साल बीच, कोसा, जड़ी बुटी, चिरौजी, शहद, लाख आदि का संग्रहण करते है। महुआ का उपयोग शराब बनाने व बेचने के लिए करते है, अन्य वनोपज साल बीज, शहद, लाख, गोंद, चिरौजी आदि का विक्रय स्थानीय सप्ताहिक बाजार में करते है। वहां से आवश्यक वस्तुओं का विनियम करते थे। किंतु आज वे सभी बस्तुओं का विक्रय रूपए में करते है व अपनी आवश्यकता की वस्तुए खरीदते है।

5.1 शिकार :–

पहाड़ी कोरवा लोग व्यक्तिगत शिकार तीर धनुष से करते है। पक्षी, गिलहरी आदि का शिकार दिन के समय करते है। सुबह तीर धनुष लेकर निकलते है। शाम जो भी वन्य पशु दिख जाए उसका शिकार करते है। बड़े जानवर का जैसे हिरण, सुअर का शिकार सामुहिक रूप से करते है। उसका आपस में बटवारा समान रूप से करते है। शिकार उपकरण के रूप में तीर धनुष, भाला, मछली हेतु जाल या मच्छरदानी के टुकडे चोरिया आदि का प्रयोग करते है।

5.2 मत्स्याखेट :–

पहाड़ी कोरवा लोग मछली पकडने हेतु चौरिया तीर धनुष, भाला जाल व

मत्स्याखेट में संलग्न बिरहोर परिवार

मच्छरदानी के टुकडे का उपयोग करते है। मछली इन्हें बरसात के समय अधिक मिलता है। अन्य समय में तालाब या छोटा झील जहां पानी का स्त्रोत हो वहां मत्स्याखेट करते है।

5.3 कृषि :—

पहाड़ी कोरवा जनजाति प्राचीन समय में बेवर कृषि करते थे। अर्थात जगल मे आग लगाकर जमीन साफ करते थे व बाद में बरसात के समय बीज छिडक देते थे। उसकी निदाई गुडाई आदि कार्य नहीं करते थे। जिसके कारण फसल की पैदावार बहुत ही कम होती थी।

वर्तमान में अब ये लोग अन्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण आधुनिक कृषि की ओर उन्मुख हो रहे है।

5.4 कृषि प्रणाली :— सर्वेक्षित परिवारों से खेती करने के तरीके, बीज, खाद आदि से सबंधित कृषि औजार के बारे में जानकारी एकत्रित किए गये है। जिसके आधार पर जानकारी संकलित करने का प्रयास किया गया है।

(क) भूमि की तैयारी :—

फसल उत्पादन के पूर्व खेती करने के लिए जमीन की जुताई की जाती है। जिसमें मिट्‌टी हल्की हो जाती है। सर्वेक्षण में जुताई के उपकरण के बारे में पुछने पर ज्ञात हुआ कि वे जुलाई महीने में खेती की जुताई हल बैल से करते है। जिनके पास हल बैल नहीं है वे अन्य लोगों से किराए में हल बैल प्राप्त करते या फिर उनके यहां मजदूरी कर हल बैल का किराया चुकाते है।

(ख) खाद का उपयोग :—

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग रासायनिक खाद का उपयोग नहीं करते है। अधिकांश परिवार गोबर खाद का प्रयोग करते है।

(ग) बीज :—

पहाड़ी कोरवा लोग प्रमाणित या सरकारी बीज का उपयोग नहीं करते है बल्कि

ग्राम में निवासरत अन्य जातियों के पास उपलब्ध बीज का उपयोग करते है।

(घ) बुआई पद्धति :–

पहाड़ी कोरवा लोग समान्य छिडकाव पद्धति का उपायोग करते है। वर्तमान में कुछ ही परिवार है जो रोपा पद्धति का उपयोग करते है। बारिस के पूर्व खेत की जुताई कर दिए रहते है। पहले पानी आने पर जुताई कर बीज का छिड़काव कर देते है। हल चलने के कारण बीज मिट्टी में मिल जाता है। जैसे ही वर्षा का पानी पड़ता है बीज दो तीन दिन बाद अंकुरण निकलने लगता है। रोपाई पद्धति में खेत के 1/2 हिस्से में हल चलाकर छिड़काव कर बीज बो देते है। धान 1/2 फीट पौधे होने पर उखाड लिया जाता है। इसे ही रोपा कहते है। रोपा हेतु खेत की दो तीन बार जुताई कर खेत में पानी भर दिया जाता है तथा लेई तैयार करते है बाद मे धान के पौधे को रोप दिया जाता है। इसके बाद इसमे खाद उपलब्ध होने पर डालते है। अन्यथा ऐसे ही पड़ा रहता है। कुंवार कार्तिक में धान पकने पर काट कर खलियान में खरही बनाकर रखते है। समयानुसार बैलों से धान पीटकर पैरा को अलग कर धान को घर के अन्दर ले जाते है व पैरा को पशुओ के खिलाने के लिए खलिहान में छोड देते है।

(ङ) बियासी करना :–

छिडकाव पद्धति से कृषि करने पर फसल जब 1–2 फीट का होता है तब बियासी किया जाता है। इसमें खेतो में पानी भरकर फसल पर हल चलाया जाता है। जिसमें फसल उखड जाता है। इसके साथ ही अन्य दुब, घास खरपतवार नष्ट हो जाते है एवं धान का पौधा पुनः जड़ पकड लेता है।

(च) निदाई गोडाई :–

सामान्यतः निदाई गोडाई एक या दो बार किया जाता है। सर्वेक्षण के मध्य पुछताछ करने पर बताया गया कि सामान्य एक ही बार निदाई गुड़ाई का कार्य किया जाता है। धान के पौधे में खरपतवार अधिक होता है। निदारई करवाने से खरपतवार को उखाड कर बाहर निकाल दिया जाता है। निदारई करने से फसल बहुत कम होता है।

गोडाई का कार्य मिट्टी के बड़े बड़े ढेलों को फोडकर छोटे–छोटे टुकड़ों में बांट दिया जाता है। जिसमे मिट्टी भूरभूरी हो कर अच्छी उत्पादन देती है।

(छ) कटाई तथा मिसाई :–

फसल तैयार होने के पश्चात कटाई का कार्य किया जाता है। फसल कटाई में मुख्य औजार हसिया अथवा हसुआ होता है। कटाई कर फसल को बोझा बनाकर खलियान मे पहुंचाया जाता है। खलिहान मे धान को खरही बनकार रखा जाता है।

मिसाई के लिए फसल को खलिहान में अलग–अलग छितराकर रख देते है। फिर उस पर बैलों के समूह को गेरवा में बांध कर हांका जाता है। यह क्रिया 3–5 घण्टे तक करते है। जिससे अनाज पैरा से अलग हो जाता है। अनाज से पैरा को साफ कर अलग लिया जाता है।

(ज) संग्रहण :–

मिजाई कर लाया गया अनाज को घर कावड़ सिका अथवा टोकरी में रखकर घर के अंदर ले जाते है। घर के अन्दर कोठी या छोटा पूड़ा घर में रखा रहता है। उसमें अनाज को भरकर रख देते है।

5.5 मजदूरी :–

पूर्व में पहाड़ी कोरवा वनो पर निर्भर रहते थे कितु वर्तमान में पहाड़ों वनों का रख रखाव सरकार के द्वारा किए जाने के कारण इनका जीवन सिर्फ वनोपज पर आधारित नहीं रह गया बल्कि वे अब अन्य कार्यो की ओर अग्रसर हुए है।

(क) शासकीय कार्यो में वन विभाग :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग अभी भी वन विभाग द्वारा दैनिक मजदूर के रूप में कार्य कराया जाता है। इन्हें रोज पैसे की आवश्यकता होने के कारण वन विभाग में बड़े पैमाने पर कार्य नहीं करते है।

बल्कि अधिकांश पहाडी कोरवा स्त्री पुरूष दैनिक मजदूरी हेतु ग्राम के अन्य जनजातियों के यहां कार्य करते है। अथवा लकड़ी व अन्य वनोपजों का विक्रय कर

आजिविका के साधन जुटाते है।

कृषि पर इन्हें अधिक लाभ नहीं होता बिल्क खाने के लिए इन्हें 2–5 माह का अनाज ही मिल पाता है।

5.6 पशुपालन :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति का पशुपालन में विशेष रूचि नहीं होता है। शासन द्वारा इन्हें कुछ वर्षो पहले बैल जोड़ी प्रदान किया गया था। जिन्हें इनके द्वारा बेच दिया गया या मारकर खा गये अथवा जंगलों में वन्य पशुओं के शिकार हो गये। इनके द्वारा मुर्गी आदि का पालन किया जाता है।

5.7 श्रम विभाजन :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोगों में श्रम विभाजन का कोई सर्वमान्य सिंद्धात नहीं है। वयस्क महिला पुरूष रोजी–रोटी के लिए वन में निकल जाते है। जैसे पुरूष शिकार के लिए व महिलाए छोटे बच्चों को लेकर कंद मुल फुल चार तेन्दू महुआ तेन्दूपत्ता मोहलाइन पत्ता संग्रहण के लिए समयानुसार निकलती है। पुरूष शिकार व लकड़ी सूखी पेड़ को काटकर विक्रय के लिए आसपास के गांव या बाजार में ले जाकर विक्रय कर देते है व प्राप्त पैसे से चांवल महुआ आदि खरीद कर ले आते है। 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से कोई कार्य नहीं लेते है। बल्कि माता पिता के कार्यो में हाथ बंटाते है। 14 वर्ष से उपर होने पर बच्चे शिकार अथवा अन्य कार्य को करने लगते है।

5.8 दिनचर्या :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोगों का दिनचर्या सुबह 5 बजे से शुरू हो जाती है। पुरूष वर्ग उठते ही जंगल की ओर चला जाता है। वहां वह दैनिक कार्यो को सम्पादित कर शिकार करने हेतु धनुष बाण अथवा कुल्हाडी लेकर चलता है। कुल्हाड़ी से सुखी लकड़ी काटकर बाजार में दोपहर तक बेचकर शाम को चांवल व अन्य आवश्यक वस्तुए लेकर घर आता है। महिलाएं सुबह उठकर झाडू लगाती है और पानी भरकर दैनिक दिनचर्या हेतु नदी तालाबों की ओर चली जाती है। घर में उपलब्ध

सामाग्री से भोजन बनाकर बच्चों को खिलाकर जंगल की ओर कंदमूल फल व वनोपजों के संग्रहण हेतु जाती है। शाम तक वापस आती है तब तक पुरूष भी अपने साथ लाए सामानों से रसोई तैयार कर खा पीकर सो जाते है।

5.9 सम्पति :–

पहाड़ी कोरवा के पास सम्पति के नाम पर कुछ नहीं होता है। कुछ टूटे–फूटे बर्तन, धनुष बाण, कृषि के औजार आदि वस्तुएं होती है। जंगल की जमीन होती है। जो इनके नाम पर नहीं होती चूंकि आवास बदलते रहते है। अतः स्थायी भूमि इनके पास नहीं रहते है। जैसे ही लड़का बड़ा होता है। विवाह के बाद उसे घर बनाकर अलग रहने हेतु दे दिया जाता है।

5.10 बाजार व्यवस्था :–

सामान्यतः पहाड़ी कोरवा जनजाति अपने दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति साप्ताहिक बाजार से करते है जो सप्ताह में किसी विशेष स्थान पर लगता है। वहां पर ये वनों से संग्रहित वनोपज का बाजार में विक्रय करते है व अपनी आवश्यकताओं की वस्तुएं जैसे नमक, मिर्च, साबुन, कपड़े, जूता, चप्पल व अन्य वस्तुए खरीदते है।

पूर्व में जनजाति के लोग वस्तु विनियम करते थे। किंतु वर्तमान में वे अपनी वस्तु को बेचकर कर पैसे प्राप्त करते है व उस पैसे से अपनी आवश्यकता की वस्तुएं क्रय करते है। नाप तौल हेतु सरकार द्वारा निर्धारित उपकरणों का प्रयोग व्यापारियों द्वारा किया जाता है उसी से खरीदी विक्री का कार्य किया जाता है।

5.11 खाद्य पदार्थो :–

खाद्य पदार्थो वनोपजों का संग्रहण घर में रखते है। संग्रहण हेतु किसी विशेष पद्धति या तरीका नहीं अपनाते है जैसे महुआ को धुप में सुखा कर रखते है ताकि खराब न हो जाए।

5.12 पलायन :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति अपने घर के आस–पास ही पलायन करते है।

विशेषतः घर के किसी सदस्यों की मृत्य होने पर अपने आवास को छोड़कर दूर नया आवास बनाते है। जिला या गांव छोडकर नहीं जाते है।

5.13 परिवार की औसत आय :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति का आय का कोई विशेष साधन नहीं होता है। वनोपज संग्रहण लकड़ी बेचना व दैनिक मजदूरी इनके प्रमुख आय का स्त्रोत है। कृषि से विशेष आय प्राप्त नहीं होती है।

अध्याय-छः सामाजिक जीवन

समाज का निर्माण व्यक्ति के लिए आवश्यक है बिना समाज के जीवन निरस व निरर्थक है। समाज ही व्यक्ति के व्यकित्व का निर्माण करता है। समाज ही व्यक्ति का सर्वागीण विकास करता है। बिना समाज के जीवन का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। व्यक्ति पैदा अकेला होता है लेकिन उसका पालन पोषण समाज में होता है। हर जाति समाज का उसके कार्य के अनुसार विभाजन किया गया है।

6.0 उप जाति :-

समाज का विभाजन कर उपजाति वंश, गोत्र आदि के रूप में किया गया है। पहाड़ी कोरवा जाति का मुख्य तीन भाग है। कोरवा को मूल वंशज माना गया है। पहाड़ में निवासरत होने के कारण ये विशेष पिछड़ी जनजाति के रूप में सरकार द्वारा पहाड़ी कोरवा चिन्हाकित किया गया। तीसरा वर्ग डिहारी कोरवा कहा गया जो मैदान व सामान्य जाति के लोगों का अनुसरण कर अन्य जनजातियों के साथ रहने लगे।

गोत्र :-

पहाड़ी कोरवा जनजाति में गोत्र का महत्व पूर्ण स्थान होता है। ताकि संबंध स्थापित करते समय इसका विशेष महत्व होता है। एक ही गोत्र में विवाह निषेध माना गया है। स्व गोत्र मे लड़की लड़के को भाई बहन माना जाता है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में 08 गोत्र पाए गये है जो निम्नानुसार है :-

1. हसदवार
2. एदेगवार
3. मुडियार
4. गिनू
5. हड़मड
6. सामढ
7. सामर वार

8. रेहला

पहाड़ी कोरवाओं द्वारा गोत्र व्यवस्था में गोत्र की उत्पति निम्नानुसार बतायी गई है।

1. हसदवार गोत्र :—

सर्वेक्षण के मध्य बताया गया कि परिवार का मुखिया अपने पुत्र के विवाह के लिए योग्य लड़की तलाशने निकला, परन्तु उसे कोई लड़की नहीं मिली। भटकते—भटकते कई लोग उस पर हंसे और इस प्रकार भटकते रहने के कारण उसे भी अपने आप पर हंसी आई और हंसने के कारण ये अपने को हसदा गोत्र कहलाए जो हंसदवार के नाम से जाना गया।

2. एदगे अथवा एदगेवार :—

पहाड़ी कोरवा जनजाति का यह गोत्र मल—मूत्र त्याग कर छोड़ देने वाले व्यक्ति अपने को एदगे या एदगेवार कहलाए।

3. हडमड / हारमठ गोत्र :—

हारमठ का अर्थ हल्ला करना से है। इन के पूर्वज हल्ला करने का कार्य करते थे जिनके कारण ये लोग हारमठ या हडमड गोत्र कहलाने लगे।

4. गिनू गोत्र :—

कोरवा बोली / भाषा में गीनू का अर्थ पानी होता है। इस गोत्र के पूर्वज जल क्रीडा / पानी में मछली पकड़ना कछुआ व केकडा पकडने में व्यस्त रहने के कारण गिनू गोत्र के रूप में जानने लगे।

सामड गोत्र :—

पहाड़ी कोरवा जनजाति के ये लोग सबको साथ लेकर चलते थे जैसे सामाजिक कार्य व शिकार में साथ लेकर चलते थे। समाज को एक जूट करने वाले व्यक्तियों के पूर्वज समाड गोत्र कहलाए।

हसदवार गोत्र पहाड़ी कोरवा जनजाति में सबसे उपर का दर्जा रखता है।

इनका मुखिया हसदवार गोत्र से चुना जाता है। एदगेवार गोत्र के व्यक्तियों को असभ्य माना जाता है। क्योकि ये लोग अपेक्षा कृत आक्रमक प्रवृत्ति के माने जाते है।

अन्य गोत्र के लोग अपनी गोत्र की उत्पत्ति बताने में असमर्थ रहे।

6.1 परिवार :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति मुख्यतः एकल परिवार में विश्वास रखता है। परिवार में माता पिता व आविवाहित बच्चे रहते है। बालक के वयस्क होते ही उसका विवाह कर उसे अलग आवास रहने के लिए दे दिया जाता है।

6.2 नातेदारी :–

नतेदारी को दो भाग में बांटा गया है। एक रक्त संबंधी व दूसरा विवाह संबंधी।

1. रक्त संबंधी :– रक्त संबंधी नातेदारी में माता–पिता, पुत्र–पुत्री, दादा–दादी, चाचा–चाची, भतीजा–भतीजी, चाचा, ताउ, भाई व बहन।

2. विवाह संबंधी :– इस नातेदारी में सास–ससुर, साला–साली, नाना–नानी, मामा–मामी, समधी–समधंन, मौसा–मौसी व जीजा

हास परिहास : –

पहाड़ी कोरवा जनजाति में हांस परिहास का संबंध जीजा–साली, दादा–पोता, भाभी–देवर आदि से हांस परिहास का संबंध होता है।

माध्यमिक संबोधन :–

माध्यमिक संबोधन दो संबोधन के बीच होता है। जिसका नाम नहीं लिया जाता जैसे पति–पत्नि के बीच या बडी साली के साथ/पत्नी अपने पति को नाम से नहीं बुलाती बल्कि उसके स्थान पर देवर का नाम लेकर की उनका भाई बच्चे होने पर बच्चे के नाम से आगे पापा या पिता या बाबा आदि लेकर उच्चारण किया जाता है।

नातेदारी संबोधन :–

कोरवा बोली में	हिन्दी में संबोधन
आया	मां
दादा	बडा भाई
भाई	छोटा भाई
दाउ	पिता

6.3 अर्न्तजातीय संबंध :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति में भी अंर्तजातिय संबंध पाया जाता है। हसदवार गोत्र अपने को समाज में प्रमुख मानते है व अन्य गोत्र को अपने से छोटा मानते है। इसी प्रकार अन्य जनजातिय समाज को अपने से उपर व नीचे का दर्जा दिया जाता है।

ऊंची जातियां :–

ब्राम्हण, क्षत्रीय, बनिया

बराबर की जातिया:–

उरांव, गोड़, किसान, नगेसिया, कंवर

नीची जातियां:–

मेहतर, मोची, नाई, महकुल, रजवार

पहाड़ी कोरवा अन्य जातियों से पक्का भोजन नहीं ग्रहण करते है। केवल कच्चा भोजन व पानी लेते है।

6.4 महिलाओं की स्थिति :–

पहाड़ी कोरवा में महिलाओं को बराबरी का दर्जा प्राप्त है किंतु वे पुरूषों के अधिनस्थ रहती है तथा पुरूषों के काम में पूरा हाथ बटाती है।

6.5 पारिवारिक संबंध :–

जनजाति में पारिवारिक संबंध मधुर होता है। परिवार में अविवाहित बच्चे ही रहते है विवाह पश्चात बच्चे अपना अलग घर बनाकर रहने लगते है। अतः संबंध भी मधुर रहता है।

परिवार के सदस्यों का संबंध :–

1. माता पिता :–

बच्चों का पालन पोषण, शिक्षा, शादी ब्याह कराना माता–पिता का कार्य होता है।

2. पति–पत्नि :–

समाज में पति–पत्नि का संबंध अटुट माना जाता है। पत्नि घर का सारा काम करती है। आर्थिक कार्यो में पत्नि–पति का पूरा सहयोग करती है। जंगल से कंद फूल

Chhattisgarh Tribal Research Institute

Chhattisgarh Tribal Research Institute

फल लाना खाना बनाना बच्चों की देख रेख करना जैसे कार्य करती है। स्त्री का स्थान पुरूष से नीचे रहता है। स्त्री अपने पति का सर्वस्व मानती है। पत्नि पति की सेवा करना अपना धर्म समझती है। व संबोधन में पति का नाम नहीं लेती, नाम के स्थान पर बच्चों के पिता के नाम से संबोधित करती है।

3. माता–बड़ी लड़की :–

माता के बाद बड़ी लड़की घर का सारा कार्य करती है। घर वहीं संभालती है। घर की लिपाई, बर्तन साफ करना, पानी भरना व छोटे भाई बहनों को संभालना।

4. माता–छोटी लड़की :–

छोटी लड़की सबकी दुलारी होती है। उसे ज्यादा डांट–डपट नहीं किया जाता है।

5. पिता–पुत्र :–

पुत्रों को पिता बचपन से प्यार दुलार करता है। पुत्र की पढ़ाई लिखाई तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति पिता करता है। पुत्र युवा हो जाने पर पिता का सम्मान व उनकी आज्ञाओं का पालन करता है।

6. माता–पुत्र :–

माता पुत्र को बड़ा प्यार करती है व कोई बड़ा कार्य होने पर पिता के बाद पुत्र से ही सलाह मशवरा करती है।

अध्याय-सात जीवन चक्र

7.0 जन्म संस्कार :–

ऋतुमति स्त्री को अशुद्व माना जाता है। ऋतु होने पर महिला घर के मुख्य द्वार से भीतर प्रवेश नहीं करती है बल्कि घर के अन्य द्वार खिड़की से आना जाना करती है, न ही वो किसी व्यक्ति या वस्तु का स्पर्श करती। ऋतु मति स्त्री मासिक धर्म पूरा होने जो 3–5 दिन का होता है पूरा होने पर स्नान कर शुद्व होती है तभी वह घर के अन्य कार्यो का सम्पादन करती है।

7.1 जन्म :–

स्त्री जैसे ही गर्भ धारण करती है पता चलने के उपरांत स्त्री को कठिन कार्य कराना कम कर देते है वह छोटा मोटा हल्का फुल्का काम करती है। प्रसव नजदीक आने पर "दाई" जिसे "दगरिन" कहते है बुलायी जाती है। इस समय एक देवार भी बुलाया जाता है, जो बच्चे के जन्म का समय बताता है तथा उसका पितर छांटता है। देवार उस समय अपने देवी – देवताओं को मुर्गा चढ़ाता है। नाल काटने का कार्य दाई या दगरिन करती है।

7.2 छठी संस्कार :–

बच्चे के जन्म के 5वे दिन छट्ठी संस्कार का कार्य सम्पन्न करते है। छट्ठी के दिन बच्चे का मुडंन किया जाता है व समाज को दारू हडिया आदि खिलाते पिलाते है। प्रसवोतर महिला को खाना खिलाते है व नयी साड़ी व नवजात बच्चे को नया कपड़ा पहनाया जाता है। 12वे दिन बरही किया जाता है। बरही के दिन अपने रिश्तेदारों एवं जाति समाज के लोगो को बुलाकर भोजन कराते हैं तथा हडिया (शराब) पीने का कार्यक्रम चलता है। कुछ पहाड़ी कोरवाओं के अनुसार कन्या के जन्म से तेरह दिन तथा बालक के जन्म से 15 दिन तक जच्चा अशुद्व रहती है। पहाड़ी कोरवा लोग बच्चे के जन्म के समय कांसा की थाली बजाते हैं जिससे पता चल जाता है कि समाज में किसी बच्चे का जन्म हुआ है सरसो तेल एवं हल्दी मिलाकर बच्चे के शरीर पर लेप किया जाता है।

पहाड़ी कोरवाओं में लड़को का कर्णवेधन संस्कार किया जाता है। कर्ण वेधन के दिन मेहमानों को आमत्रित किया जाता है। कर्णवेधन करने वाले को आंगन में चटाई बिछाकर बिठा दिया जाता है। उनके सामने दोने में चावल, तेल, रखा जाता है। लड़के के मामा – मामी एक – एक कान में तेल लगाते हैं तथा आलपीन (सुई) से कान छेद देते हैं। इस अवसर पर मामा – मामी तथा अन्य उपस्थित व्यक्ति बच्चे को उपहार देते हैं। कर्ण वेधन पश्चात् बच्चे को उपहार देते है। फिर सभी लोग हडिया पीते हैं तथा नाच गान करते हैं।

7.3 विवाह संस्कार :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति में प्राचीन काल में विवाह संस्कार नहीं होता था। स्त्री पुरूष एक दूसरे को पसंद कर साथ में रहने लगते थे। कुछ समय पश्चात एक प्रथा प्रारंभ हुई की सब एक साथ मिलकर त्यौहार मनाने लगे और उसमें सभी लोग हड़िया पीकर जोड़ी बनाकर नाचते थे। फिर पति–पत्नि के रूप में एक दूसरे के साथ रहने लगते।

वर्तमान में अब पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग अन्य जनजातियों के सम्पर्क में आने के कारण शादी ब्याह संस्कार को मानने लग गये है व अन्य जनजातियों के समान इस संस्कार को अपनाने लगे है।

पहाड़ी कोरवाओं में सामान्य रूप से तीन प्रकार के विवाह संस्कार पाये जाते है।

1. बड़ ब्याह
2. ढोल कडही विवाह
3. बैलकर विवाह

(1) बड़ ब्याह :–

पहाड़ी कोरवा में जब लड़का/लड़की विवाह के योग्य हो जाता है तब लड़का पक्ष अपने किसी रिश्तेदार को अगुवा बनाते है। विवाह संबंधी मध्यस्थता करने वाले को कोटवार कहा जाता है। कोटवार वर पक्ष की जानकारी वधुपक्ष के सामने रखता

है। आपस में एक दूसरे का गोत्र मिलान करते है।

बखान द्वारा एक दूसरे से बातचीत करते है। जिसके द्वारा एक पक्ष दूसरे पक्ष को अपनी जानकारी देता है। वधु पक्ष के तैयार हो जाने पर वर पक्ष स्वेच्छा से कन्या पक्ष को घर देखने के लिए निमत्रंण करते है। विजय निमंत्रण कार्यक्रम में 4–5 बुजुर्ग लोग पहुचने पर वर पक्ष उनका स्वागत करते है। स्वागत में हड़िया पिलाकर मुर्गा अथवा बकरे का मांस खिलाया जाता है। इसी तरह जब वर पक्ष कन्या को देखने जाता है तब वर पक्ष को दारू हड़िया व मुर्गा खिलापिलाकर स्वागत किया जाता है।

7.4 मंगनी :—

अन्य जनजातियों की तरह पहाड़ी कोरवा लोग मंगनी अथवा सगाई करते है। मंगनी में वर पक्ष से 15–20 बुजुर्ग रिश्तेदार कन्या पक्ष के यहां जाते है। वर पक्ष द्वारा कन्या पक्ष मंगनी में छह खड़िया अनाज प्रति खडिया 10 किलो के मान से व एक मुर्गा देता है। लड़की के लिए कपड़े व सौंदर्य प्रसाधन की सामग्री दी जाती है। मंगनी में कन्या पक्ष के आंगन में जहां समाज के लोग बैठते है। वर एवं कन्या को खड़ा कर दिया जाता है। वर एवं कन्या के पीछे कोटवार खड़ा रहता है। कन्या पक्ष का कोटवार कहता है कि मेरे पास जो लड़की खड़ी है वह यही है। यह लड़की काम करना नहीं जानती, अगर काम करने को कहो तो बिस्तर में सो जाती है। घड़ा देकर पानी लाने के लिए कहते है तो उलटा घड़ा सिरपर रख कर ले आती है। झाडू लगाने को कहो तो कचरा घर में ले आती है। प्रति उत्तर में वर पक्ष का कोटवार कहता है कि यह कन्या हमें पसंद है हम लोग ऐसी ही लड़की खोज रहे थे।

इसके पश्चात वर पक्ष का कोटवार अपने वर का बखान कुछ इस तरह से करता है कि हमारा लड़का कोई काम को कहने पर वह उल्टा काम करता है। हल में बैल की पूछ की ओर से जोड़ता है तथा सिर की तरफ से हांकता है। इस पर कन्या पक्ष का कोटवार कहता है कि हमें ऐसे ही लड़के की तलाश अपने कन्या के लिए कर रहे थे जो आज पूरी हो गई है। दोनों पक्ष के बुजूर्गो द्वारा स्वीकृति के उपरान्त लड़का–लड़की के सामने एक दो पत्ते पान व हड़िया पानी रखा जाता है। कोटवार

बारी–बारी से अपने माता पिता के नाम पर हड़िया जमीन में गिराता है। उसके बाद खाने–पीने का कार्यक्रम चलता है। लड़के–लड़की को दोनों पक्ष के समाज से मिलवाया जाता है। मंगनी के उपरान्त खानपान के कार्यक्रम को ''पान'' कहा जाता है।

7.5 विवाह संस्कार :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति में वर पक्ष का कोटवार कन्या पक्ष के पास जा कर विवाह की तिथि तय करता है। विवाह के पूर्व आंगन में मंडप बनाया जाता है। मंडप के लिए आंगन के चारों ओर चार खम्बे सरई लकड़ी के शाखा को गड़ाया जाता है। एक शाखा मंडप के बीचों बीच गड़ाया जाता है। बीच वाले डाल में सरई आम, डुमर आदि के शाखा लाते है। मंडप को पहाड़ी कोरवा ''मड़वा'' कहते है। आंगन के बीच वाले डाल के बीच चांवल हल्दी सुपाडी एवं पैसे डाले जाते है। शादी के लिए लड़का पक्ष लड़की पक्ष को 24 हड़िया प्रति हड़िया 10 किलों के मान से 60 किलो चावल 5 किलो दाल, 1 बकरा एवं पांच पत्तल में चांवल हल्दी और कुछ रूपए रखकर पहुंचाया जाता है। लगभग डेढ़ फूट की 2 लाठी जिसे इनकी बोली में ''खुटा'' कहते है। पहुंचाया जाता है। उक्त सामग्री समाज प्रमुख व ग्राम के लोगों के सामने कन्या पक्ष को सौंपा जाता है। लड़की के उपयोग हेतु कपड़ा, चूड़ी व सौंदर्य प्रसाधन की अन्य वस्तुएं भी वर पक्ष द्वारा दिया जाता है। लड़की के माता–पिता तथा भाई–बहन के लिए भी कपड़े दिए जाते है। जिसे क्रमशः मायसरी, भाई सुख, सादा धोती एवं मामा सुख कहा जाता है। यदि लड़की की आनी (दादी) जीवित है तो उसे भी कपड़ा दिया जाता है। जिसे 'आजी गुदरी' कहते है। लड़की की किमत (वधु मूल्य) 7.50 रूपए चुकानी पड़ती है। वर को हल्दी सुबह शाम व दोपहर में लगाया जाता है। तिसरे दिन वर को दुल्हा का नया कपड़ा पहनाया जाता है। बारात वधु के यहां प्रस्थान करती है। बारात को अपने घर से पहले ही किसी घर में ठहराया जाता है। जहां से लड़की वाले सम्मान के साथ नाचते गाते उन्हें लड़की के दरवाजा पर ले जाते हैं। जहां महिलायें लोटे में पानी रखकर आम के पते से बारातीयों के उपर छिड़क कर स्वागत करती है। तत्पश्चात् ढेड़हा वर को कंधे पर लेकर चलता है और महिलायें उसके दोनो पैरो पर आमपत्ती से

पानी छिड़कती है। लड़की के घर के दरवाजे पर मडंप से वर को छुआया (स्पर्श) कराया जाता है और बारात अपने जनवासे पर वापस लौट आती है। लड़की की सहेलिया वधु को रातभर तेल हल्दी मलती हैं। कन्या को गोदी में लेकर नचाया जाता है। इस कार्यक्रम में एक विशेष धुन में वाघ यंत्र बजाये जाते हैं। सुबह होने पर कन्या के शरीर में लगाये गये हल्दी को मल कर उतार कर पीसे हुए चावल के आटे का लेप किया जाता है। कन्या अपनी सहेलियो के साथ मडंप को छुते हुए 5–7 बार घुमती है। तत्पश्चात् लड़की को नहलाकर नये वस्त्र पहनाए जाते हैं और उसे विवाह के लिए तैयार किया जाता है।

बारात मडंप में आने पर ढेड़हा मडंप के बीचो बीच चांवल के आटे का चौक पुरता है तथा स्वयं वर वधु को बिठाकर मंत्रो से विवाह सम्पन्न कराता है। मडंप से रस्सी निकालकर गांठ बनाई जाती है। लड़का (वर) बीच के मड़वे का एक चक्कर लगाकर उसी गठान से लड़की (वधु) के माथे पर तेल एवं सिंदूर लगाता है। इस बीच वर अपने दाहिने पांव से लड़की के बायें पैर के अंगुठे को दबाए रखता है। शादी के पश्चात् तेल पिलाने का कार्यक्रम आरंभ होता है। इस अवसर पर वर, वधु के सिर के उपरी भाग के बालों को सामने लाकर चोटी बनाता है और उसमें तीर फंसा देता है। वर–वधु एक दूसरे के सिर पर सरसों का तेल डालकर मलते हैं। इस कार्यक्रम में वर वधु के चारो ओर कपड़े का घेरा बनाकर रखते हैं। घेरे के बाहर वर वधु पास के लोग दोने में पानी रखते हैं। तेल पिलाने का कार्यक्रम समाप्त होते हीं कोटवार ताली बजाता है और मड़वे को जोर से हिलाता है। उसी समय चारो ओर से वर वधु पर पानी फेंका जाता है।

शादी एवं तेल पिलाने के रस्म पूरी होने के बाद दोने तथा लोटा में हड़िया लाया जाती है और वर वधु एक दुसरे को हड़िया पिलाते हैं। लड़की के आंचल एवं वर के धोती के छोर को मिलाकर उसमें सिक्के डालकर गांठ बांध दी जाती है और समाज के लोगो से भेंट करायी जाती है। चुमावन पश्चात् जाति समाज के लोग हड़िया पीते है और लड़की की विदाई कर दी जाती है।

(ब) ढोल कडही विवाह :–

यदि लड़की का पिता अत्यधिक गरीब होता है तो लड़का पक्ष लड़की पक्ष को अपने घर लाता है और विवाह का सम्पूर्ण रस्म वर के घर में सम्पन्न होता है। इस विवाह को ढोल कडही विवाह का नाम दिया गया है।

(स) बैलकर विवाह :–

बैलकर विवाह में शादी का कार्यक्रम चढ़ विवाह के अनुसार ही होता है परन्तु शादी के बाद वर पक्ष के लोग वधु पक्ष के यहां खाना – पीना नहीं करते है। इस कारण लड़की पक्ष का लड़के पक्ष से निम्न स्तर का होना माना जाता है।

(द) बहु पत्नि विवाह :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति में बहु पत्नि विवाह मान्य है। अर्थात् पुरूष एक से अधिक पत्नियां रख सकता है। निःसंतान होने पर व प्रथम पत्नि से केवल पुत्रियां होने पर या सामर्थवान होने की दशा में पुरूष एक से अधिक पत्नियां रख सकता है।

पहाड़ी कोरवा में विधवा विवाह प्रथा भी प्रचलित है। विधवा विवाह का सम्पूर्ण कार्यक्रम दिन में ही सम्पन्न होता है।

इन विवाहों के अलावा कुछ और पद्धति से भी पहाड़ी कोरवा में वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न की जाती है जो निम्नानुसार है :–

विवाह संबंध स्थापित करने के लिए वर पक्ष, कन्या पक्ष के यहां जाता है। वर पक्ष की ओर से कन्या पक्ष के घर में लाठी टेकते है। इसी दिन में कन्या वर पक्ष के बंधन में रहती है। जब दोनों पक्ष शादी के लिए सहमत हो जाते है तो वर पक्ष की ओर से 6 मन चांवल सुकदाम के रूप में कन्या पक्ष को दिया जाता है। पूरे चांवल का हडिया बनाया जाता है। जो शादी के दिन उपयोग किया जाता है।

7.6 वर पक्ष :–

वर पक्ष के आंगन में मंडप तैयार किया जात है जिसे मड़वा कहते है। बीच में मडवे के साथ बांस महुआ आदि की शाखा व पत्तल में चांवल हल्दी पसा आदि गड़ाया जाता है। मंडप तैयार होने के बाद वर घर के देवी देवताओं का पूजा करता है।

पश्चात् हल्दी तेल चढाया जाता है। इस कार्यक्रम में कुंवारी लड़किया रातभर नाच–गान करती है। प्रातः होने पर वर को नहला घुलाकर तैयार कर बारात वधु घर के लिए प्रस्थान करती है।

वधु पक्ष :–

वर पक्ष की भांति वधु पक्ष के यहां मंडप तैयार किया जाता है तथा तेल हल्दी चढाने और नाच गान का कार्यक्रम होता है। कन्या पक्ष की ओर से बरातियों का पर घावन (स्वागत) किया जाता है। वर कन्या को नचाया जाता है। सवेरा होने पर वर वधु को अंदर लाया जाता है। घर से निकालकर दरवाजे के सामने कन्या के पीछे वर का खडाकर कुवारापन उतारा जाता है। कुंवारापन उतारने की क्रिया निम्नानुसार किया जाता है

सर्वप्रथम कन्या की ओर से हाथ की कनिष्ठ अंगुली से वर को सिंदुर लगाया जाता है। फिर वर द्वारा कन्या के मांग में सिंदूर भरा जाता है। इसके बाद टिकावन का कार्यक्रम होता है। इसमें कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को उपहार भेंट किया जाता है। चुमावन के पश्चात उपस्थित जन समूह वनदम्पत्ति को आशीर्वाद देते है। तत्पश्चात विदाई कार्यक्रम किया जाता है।

शादी के 9 दिन बाद कन्या एवं वर दोनों कन्या पक्ष के घर जाकर दो तीन दिन मेहमानी करते है। शादी के बाद 9 दिनों तक वर–बधु को बिरादरी के यहां नहीं जाने दिया जाता है। पहाड़ी कोरवा में मामा की लड़की से विवाह को उत्तम माना जाता है।

7.7 मृतक संस्कार :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति में मृत्यु को ईश्वर के आधीन मानते हैं। समान्यतः पहाड़ी कोरवा शव को जमीन के नीचे दफनाते है। व्यक्ति की मृत्यु होने पर शव को लकड़ी की सीढ़ी नुमा बनाकर उसके ऊपर का पत्ती बिछौना बनाकर शव को उपर रखते है। फिर शव को सफेद कपड़े से ढक कर शमशान की ओर ले जाते है। वहां पहले से ही 8–10 लोग, 6–4 फीट चौड़ा और 3–4 फीट गढढा तैयार करके रखते है। मृतक शव को गढ़डे में रखकर सभी शव को मुख पर हाथ से 2–3 बुंद पानी

डालते है। शव को गढडे मे उतारते है। शव के साथ लायी गई सामग्री जो मृतक उपयोग करता था। जैसे शराब, तीर, धनुष या रूपये पैसे जिसे वो सबसे ज्यादा पसंद करता था साथ में रख देते है। फिर सभी लोग उपर से मिट्टी गिराकर शव को ढंक देते है। शव को दफनाने के बाद सभी लोग स्नान कर घर लौटते है। लौटते समय आंवला की पत्ती साथ लाते है। आंवला पत्ती को मिर्च और हल्दी के साथ पीस कर सभी थोड़ी मात्रा में पीते है। सभी लोग अपने–अपने घर वापस चले जाते है।

तीसरे दिन तीजनहावन होता है तथा दसवे दिन दशकर्म की प्रथा होती है। रिश्तेदारों को सूचना दी जाती है। सभी लोग मृतक के यहां एकत्रित होते है। सभी पुरूष वर्ग एक दूसरे की दाड़ी व बाल काटते व बनाते है। नहाने के लिए नदी, तालाब की ओर प्रस्थान करते है। नहाने के पश्चात सभी लोग कतार बद्ध वापस आते है। मृतक की आत्मा को घर ले जाने (छाया छितराना) का उपक्रम करते है। घर के आंगन में एक गढ्ढा तैयार कर उसमें सात पत्ती बिछा देते है। देवार, मुर्गी चुगा कर मृतक की आत्मा को पत्ती के साथ बांध देता है। मुर्गी को काटता है और छाया को अन्दर ले जाता है। इसके बाद पांच बच्चों को बुलाकर खाना खिलाया जाता है। बच्चों के खाना खाने के बाद सभी लोग हंड़ियां पीते है। मृत्यु के समय से दशकर्म तक मृतक परिवार को छुत लगता है अर्थात अशुद्ध माना जाता है। दशकर्म के दिन जाति समाज के लोगों को भोजन कराने के पश्चात छुत समाप्त हो जाता है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति में परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु होने के पश्चात् घर को तोडफोड कर छोड देते है व परिवार अन्य स्थान पर घर बनाकर रहने लगता है।

अध्याय- आठ राजनैतिक जीवन

8.0 परम्परागत जाति पंचायत :–

अन्य समाज की भांति पहाड़ी कोरवा में जाति पंचायत होती है। जो सामाजिक समस्याओं का निराकरण समाज में ही कर लेते है। ग्राम स्तर में पहाड़ी कोरवा लोग अपने ग्राम मुखिया का चयन करते है। वहीं मुखिया ग्राम की सामाजिक समस्याओं का निराकरण करता है। कोई भी आपसी विवाद होने पर सामाजिक मुखिया के पास अपनी शिकायत लेकर जाते है। समाज प्रमुख विरादरी को एकत्रित होने की सूचना दी जाती है तथा बैठक में दोनों पक्षों की समस्याएं रखी जाती है। दोषी व्यक्ति को मुखिया द्वारा दण्ड की व्यवस्था करता है। पंचायत में मुखिया द्वारा दिया गया दण्ड दोषी व्यक्ति द्वारा अस्वीकार करने पर समाज से व्यक्ति का हुक्का–पानी बंद कर दिया जाता है।

पहाड़ी कोरवा में राजनैतिक चेतना का सर्वथा अभाव पाया जाता है। पूर्व में केवल ग्राम स्तर पर ही समस्याओं का निपटारा कर लिया जाता था। किंतु अब ये लोग धीरे–धीरे जागरूक होकर सामान्य जनजाति के साथ मिलकर रह रहे है।

8.1 ग्राम परिषद व पदाधिकारी:–

ग्राम में समाज के मुखिया को नायक या प्रधान के नाम से जाना जाता है। 2–3 अन्य व्यक्तियों का चयन किया जाता है जो ग्राम में सूचना आदि देने का कार्य करता है। जिसे सेवा कहा जाता है।

8.2 आधुनिक पंचायत :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति सुदूर वनों एवं पहाड़ियों में निवास करते है। लेकिन अब ये लोग ग्राम में कार्यरत आधुनिक ग्राम पंचायत से जुड़ने लगे है। ग्राम पंचायत चुनाव में भी भाग लेने लगे है व ग्राम पंचायत में पंच सरपंच के चुनाव में मतदान करते है।

8.3 आधुनिक राजनैतिक दलों का प्रभाव :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति पहुंच विहिन स्थानों पर रहने के कारण आधुनिक राजैनितिक दलों के कार्यकर्ता इन स्थानों पर नहीं पहुंच पाते है। फलतः आधुनिक राजनेताओं से इनका सामना नहीं हो पाता। बड़े नेता भी इन तक नहीं पहुंच पाते है।

अध्याय-नौ धार्मिक जीवन

9.0 धर्म :–

समाजिक जीवन में समाज के बाद धर्म का स्थान आता है। धर्म समाज को आगे बढ़ने का रास्ता बताती है। व्यक्ति को कैसे जीवित रहना है समाज में सही जीवन बिताने का रास्ता धर्म ही बताता है। धर्म में देवी देवता की पूजा पद्धति आदि के बारे में बताती है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति स्वच्छंद जीवन बिताना पसंद करते है वे अपने जीवन में किसी बाहरी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं करते है। इनके प्रमुख देवी–देवता भी वन पहाड़ नदी नाले व प्राकृतिक वस्तुओं से बने होते है। अर्थात इनके देवी प्रकृति पर आधारित होते है। जिनकी ये पूजापाठ करते है।

पहाड़ी कोरवा लोग अनेक प्रकार के देवी देवताओं की पूजा करते है। जो निम्नानुसार है :–

1. बुढादेव
2. ग्राम देवी
3. कामदेवी
4. शिकार देव
5. महा माई
6. ज्वालामुखी देवी
7. बुढी मां
8. रण्डा अनुसूइया रानी
9. पधार पण्डो
10. राजा चन्डोल
11. दुर्गा मां

सभी देवी–देवताओं की पूजा एक साथ नहीं करते है बल्कि अलग–अलग

समय में अलग–अलग देवी देवताओं की पूजा करते है। जैसे शिकार में जाने से पूर्व शिकार देव की पूजा करते है। ग्राम की रक्षा के लिए ग्राम देवी की पूजा करते है। बिमारी आदि से रक्षा के लिए बुढ़ी मां, ज्वालामुखी देवी की पूजा करते है। बुड़ा देव को शंकर भगवान के रूप में पूजा की जाती है।

9.1 भूतप्रेत संबंधी मान्यता :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति में भूत–प्रेत संबंधी मान्यताएं अधिक प्रचलित है ये किसी भी प्रकार की बिमारी होने पर देवी–देवता का प्रकोप समझकर बैगा गुनिया की शरण लेते है व झाड़–फूक कराते है ताकि बाधा दूर हो सके। बैगा गुनिया से तंत्र मंत्र द्वारा बाधा उपचार कराते है बिमारी में भी इन्ही से झाड फूंक कराते है।

9.3 शुभ अशुभ विचार :–

पहाड़ी कोरबा जनजाति के लोग अशुभ शुभ विचार का भी ध्यान रखते है। शिकार व अन्य विशेष कार्य करने के पहले ओझा गुनिया से विचार करने के बाद ही शिकार के लिए निकलते है।

9.2 विभिन्न सम्प्रदायों का प्रभाव :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग पूर्व में अन्य लोगों से अलगाव ही रखते थे। बाहरी व्यक्ति के सम्पर्क में आने से बचते थे। यह प्रवृति अभी भी बनी हुई है। अपरिचित लोगों से ये अभी भी बात करने में सकुचाते है। स्थानीय परिचित व्यक्ति के माध्यम से ही बात करना पड़ता है। किन्तु अब इनमें कुछ सुधार हो रहा है।

9.3 त्यौहार :–

पहाड़ी कोरवा पिता के मृत आत्मा को ईश्वर का दर्जा देकर उसे ईश्वर तुल्य मानते है। उन पर उनका पूर्ण विश्वास है। इनके द्वारा खुड़िया रानी की पूजा की जाती है।

त्यौहारों में माघ महिने में नवाखानी, करमा, दीवाली होली आदि कोरवाओं के प्रमुख त्यौहार है। सरहूल, खेरोज जगहर इत्यादि में सामूहिक पूजा का कार्य होता

है। इसके लिए मुर्गा–मुर्गी चंदा कर बैगा को देकर पूजा–पाठ कराते है।

हरियाली के दिन नयी साग–सब्जी खुखड़ी, पुट इत्यादि के साथ अपने घर के अन्दर पितरों को मुर्गा की बली चढ़ाते है तथा उसी दिन से नई साग–भाजी खाना शुरू कर देते है।

नवाखाई के दिन नये फसल व अन्न पितरों को चढाते है फिर स्वयं खाते है। नवाखाई में भी घर में मुर्गा की बली देते है। दीपावली के दिन घर में दिया जलाते है। दूसरे दिन पशुओं को तेल लगाते है। इसके बाद हड़िया शराब पीते है। दाल–भात, मुर्गा सब्जी आदि खाते है।

अध्याय-दस लोक परम्पराएं

10.0 लोग नृत्य :–

पहाड़ी कोररवा जनजाति के लोग नृत्य के पूर्व अपने को सजाते सवारते है। नृत्य के पूर्व सिर पर मयूर का पंख विभिन्न आकृतियों में लगाते है। प्रकृति के अनुसार लोकगीत व विशेष नृत्य, विशेष अवसरों पर करते है। त्यौहार के समय डमकच, करमा, झूमर नृत्य आदि किया जाता है। वर्षा ऋतु में करमा व ग्रीष्म ऋतु में डमकच बच्चे का विवाह में झूमर नृत्य आदि करते है। विवाह के अवसर पर रातभर डमकच नाच–गान करते है। लोक कथाएं कहकर और सुनकर सुनाकर मनोरंजन किया जाता है। कहानी के माध्यम से वे अपनी मातृ भाषा (बोली) में गीत सुनाकर मनोरंजन करते है।

कहानी मुख्यतः रात या शाम के समय शादी या त्यौहार के समय सुनाई जाती है। कहानियों से ज्यादा शराब पीकर एवं नाच–गान ही मनोरंजन का प्रमुख साधन होता है। शराब के नशे में नाचते है तब केवल नाचना और गाना याद रहता है। झुम–झुम मदहोशी में नाचते है। चाहे लोग उनकी ओर ध्यान दे या न दे। इनके द्वार नृत्य कर गाना कुछ इस प्रकार का गाया जाता है।

1. ओतेक दिना करमा राज हारने की बेनरे आज करम दुखिरा में ठाड

   अर्थ :– दो बार दोहराया जाता है। इसका अर्थ होता है कि हे करम देवता इतने दिन सर्दी–गर्मी, जंगल में रहें, लेकिन आज इस अवसर पर हम लोग आपकी पूजा के लिए श्रृंखला में आपके लिए खड़े है।

2. डमकच के बोल

   रामचन्द बना गेलय
   सीता जी के मैना र
   रावण हेरि लेल

अर्थ :– रामचन्द जी वन की ओर चले गये सीता अकेली देख रावण ने सीता को माता का हरण कर लिया।

परंपरागत वाद्य यंत्र के साथ पहाड़ी कोरवा पुरूष

3. केसना दई सीथा तेरा
लोटे लूटा यू तेरा
तीसिंग बु हेस्ता
बियारी कोवा य तिलिंग दो
कोसडा लोटा लोटा हो यू तेरा
निंदवा गोउ बू आर जोय
ताना निंदावा बू भाई हवा बू जोकता।

अर्थ :– शराब को छान लिया पूरा परिवार के लोग लोटा–लोटा पी लिए। इसके बाद सभी परिवार के लोग नशे में चूर हो जाये। जहां पीए वहीं हम सब रह जायेगे। खाना नहीं आज तो हम लोग लोटा लोटा शराब पीये है। रातभर सोयेगे। सबेरे भोजन बनायेगे खाएगे।

4. लाल लाल वो मुगों छानी चढ़
बांस रे मुर्गा डेना
संसइर के काकरे चो

अर्थ :– लाल रंग का मुर्गा घर के छत पर जब चढ़ता है तो उसे छत पर बैठा देखकर पहाड़ी कोरवा कहता है। अब तू कूकडकू की आवाज लगा।

5. लागड़ा लागड़ा हस गड़ा गोड़ में
हुनडलू हुन्डलू गुन होन इडा
निया इनिक गोड़ में।

अर्थ :– केकला केवडा तुम मिट्टी खोदने (दुन्डलू) मेढ़क का छोटा बुच्चा जिसे अंगेजी में टेडपोल कहते है। की ओर देखकर कहते है हमारा बच्चा रो रहा है मचल रहा है तुम चुप करा दो

बोली :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग आस्ट्रिक भाषा परिवार की बोली बोलने वाली जनजातियों में से एक है। यह बोली/भाषा जनजातियों का एक विशेष धरोहर होता है जब ये लोग आपस में बात करते है। तब इस बोली का उपयोग करते है। कोरवा लोगों की बोली के कुछ अंश इस प्रकार है :–

कोरवा बोली	
1. ईग पहाड़ी कोरवा होड हवे	मैं पहाड़ी कोरवा हूं
2. अप चिलम तुलाता	तुम क्या कर रहे हो
3. इठनाआ घरे सेन्ता	मैं इधर जा रहा हूं
4. अय करम स्घस्ताम गोए	आप कहां जा रहे है
5. चल कंदा को डेक	चलो कांदा खोद ने
6. दबु सेन्डा	चलो शिकार खेलते
7. साहिब कीम अलेरा कहवी कहानी	साहब अगर हमारी कहानी लिखते तो अच्छा होता
8. साहिब का दारे आये होय किया ना	साहब आप लोग कहाँ से आये हो
9. अपेरा जोड़ा कराये ईदाना	आपका घर कहां है।

उपरोक्त बोली के कंदा (केन्दा) शजू का प्रयोग उरांव जनजाति की कुडुख बोली से मिलते जुलते है।

अध्याय-ग्यारह भाषा बोली

11.0 भाषा बोली :–

पहाड़ी कोरवा की अपनी अलग एक पहचान है उनकी बोली/भाषा भी अलग है जो आसानी से समझ में नहीं आती है।

क्र.	पहाड़ी कोरवा बोली के शब्द	हिन्दी रूपान्तर
1	सीम	मुर्गी
2	काकडो	मुर्गा
3	काठ	पर
4	उतु में जोड	गरम भोजन
5	टीई	हाथ
6	बो	सिर
7	लुतुर	कान
8	उब	बाल
9	छेटी	बकरी
10	हाददा	भेंड
11	खाड़ा	भैंस
12	डरी	बैल
13	उरीज	गाय
14	पटेवा	कबुतर
15	कुसु	कुत्ता
16	में अति	रोटी
17	गुनु	बिल्ली
18	कोदी	फावड़ा
19	मरा	मयुर
20	टांगा	टगियां
21	सिंग	पेड़
22	बुडी	सागर
23	चाईतीत	पंक्षी
24	मंदार	ढोल मांदर
25	बुलन्द	नमक
26	दबडिया	नगाड़
27	सेगेल	आटा
28	सबो	शहर
29	डफल्ला	डफली
30	तील	खटमल

क्र	पहाड़ी कोरवा बोली के शब्द	हिन्दी रूपान्तर
31	निन्होर	मक्का
32	अंगा	कमीज
33	सेरामी	कुटकी
34	कमसा	लंगोट
35	हुडू	धान
36	पेधोरी	चादर
37	दाइल	दाल
38	कमडी	कम्बल
39	जाऊ	भोजन
40	हुआ	कटोरा
41	दा	पानी
42	कराई	कडाही
43	सुनुम	तेल
44	चब्दु	मटका
45	हडदी	हल्दी
46	हाड	हल
47	सहन	लकड़ी
48	आया	मां
49	सकाम	पत्ता
50	दादा	बड़ा भाई
51	तेरेल	तेन्दू
52	भाई	छोटा भाई
53	मादू	महुआ
54	कोसना	हडियां
55	सेन्ता	खाना
56	काराम सेता	कहां जा रहे हो
57	कप बेग हबेला	कहा से आ रहे हो
58	करम सेत्ता	कहां जायेगे।

अध्याय-बारह परिवर्तन एवं विकास

12.0 परिवर्तन एवं विकास

परिवर्तन समय का अपरिहार्य अंग होता है। समय के साथ सभी चीजों में बदलाव आता है। चाहे खान पान से पहनने ओढ़ने बिछाने पढाई लिखाई अर्थात समाज के हर कार्य मे एक समय बाद अपने आप परिवर्तन आते है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में भी समय के साथ बदलाव आते जा रहे है। जहां पहाड़ी कोरवा जाति के लोग घने जंगलों में निवास करते थे। वनों के कटने के कारण अब सामान्य लोगों के सम्पर्क में आने लगे है। पहले कपड़े के नाम पर पत्ते लंगोटी फिर धोती पहनते थे। अब वे कमीज पेंट आदि पहनना शुरू कर दिए है। जीविकों पार्जन पहले शिकार व फल फूल पर आधारित थे। आज लकड़ी बेचना मजदूरी करना, कुछ लोग सरकारी नौकरी आदि भी करने लगे है। सरकार के द्वारा स्थापित पहाड़ी कोरवा विकास अभिकरण के माध्यम से नमक साबून, मच्छरदानी, कम्बल, पेटी, जनता धोती आदि वस्तुएं प्रदान की जाती है। इस तरह लोग पहले पहाड़ों पर निवास करते थे आज समतल मैदान में निवास कर रहे है। आस पास, निवास करने वाली अन्य जनजातियों के सम्पर्क में आने के कारण अन्य जातियों के रहन सहन को देखकर बदल रहे है। जिससे इनके जीवन में आमूल चूल परिवर्तन आ रहे है। बच्चों को स्कूल भेजा जा रहा है। जहां मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम संचालित है जहां इनके बच्चों को दोपहर का भोजन निःशुल्क दिया जा रहा है।

धार्मिक क्षेत्र में अंध विश्वासों में कमी आ रही है। लोग सरकारी डाक्टरों से भी ईलाज करा रहे है। ग्राम पंचायतों के निर्वाचन आदि में भाग लेकर वोट डालते है। साथ ही पंच सरपंच आदि चुनकर आ रहे है। इस प्रकार जाति पंचायतों से उपर उठ रहे है।

अध्याय-तेरह समस्या

समस्या :–

जीवन जब सरल व सादा रहता है तब समस्या कम रहती है। जैसे व्यवहार, खान पान आचार विचार बदलते है तभी समस्याएं सामने आने लगती है। पूर्व में लोग घने जंगलों में निवास करते थे जहां शिकार कंद मूल फल फूल खाकर रहते थे। वनों के कटने के कारण कंदमूल फलफूल कम हो गये फलतः अन्य आहार की तलाश में जंलों से बाहर आने लगे फलतः अन्य जनजातियों के सम्पर्क में आने के कारण इनकी आवश्यकताएं बढ़ने लगी फलतः विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होने लगी कुछ समस्याएं बताई गई जो निम्नानुसार है :–

13.0 सामाजिक :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति की एक प्रमुख समस्या उनका समाज है। जो दो भागों में बंट गये है। जिसके कारण जाति दो भागों में विभाजित हो गई है। एक पहाड़ी कोरवा दूसरा डिहारी कोरवा। दोनों एक ही समाज के है लेकिन खान–पान रहन सहन अगल होने के कारण समाज का विभाजन हो गया है।

13.1 आर्थिक :–

पहाड़ी कोरवा जनजाति पूर्व में शिकार व कदमूल फलफूल पर आधारित थे व संतुष्ट जीवन जी रहे थे। किंतु वनों की कटाई तथा जंगल तेजी से समाप्त होने, शिकार पर प्रतिबंध होने से पर्याप्त भोजन न मिलने के कारण वनों से बाहर आ रहे है जहां इन्हें अधिक काम करने पड़ रहे है।

13.2 शिक्षण :–

पूर्व में पहाड़ी कोरवा जनजाति की शैक्षणिक गतिविधि न्यून अर्थात 5 प्रतिशत से कम थी जो इनके विकास में सबसे बड़ी बाधा थी। आज भी ये जातियों दुर्गम जंगलों में निवास करती है। जहां शैक्षणिक स्कूल कम है यदि स्कूल है तो शिक्षक वहां नहीं जाना चाहते फलतः इनका शैक्षणिक विकास उस तेज गति से नहीं हो पा रहा है

जैसे होना चाहिए था।

13.3 राजनैतिक प्रभाव :–

पहाड़ी कोरवा में राजनैतिक चेतना का पूर्ण अभाव था जो आज भी पूर्ण नहीं हो पाया है। अन्य राजनैतिक गतिविधियों से इनका सामना नहीं हो पाता। बड़े–बड़े नेता जो चुनाव लड़ते है इनके पास तक नहीं पहुंच पाते है कोई भी व्यक्ति यह नहीं बता पाता की इस क्षेत्र का विधायक या एम.एल.ए. कौन है या भारत का राष्ट्रपति प्रधान मंत्री कौन है।

13.4 धार्मिक :–

कोरवा जनजाति में धार्मिक समस्या भी अहम होती है। समाज में कई देवी देवता है जिनका समय–समय पूजा किया जाता है। जिसके कारण इनकी आर्थिक स्थिति और कमजोर होती जा रही है।

13.5 शासकीय योजनाओं की जानकारी :–

पहाड़ी कोरवा लोगों को शासकीय योजनाओं की अधिक जानकारी नहीं होती है। सरकार द्वारा इनके विकास के लिए कौन–कौन सी योजनाएं बनाई गयी है तथा इन योजनाओं का कितना लाभ इन्हें मिल रहा है।

13.6 स्वास्थ्य संबंधी :–

पहाड़ी कोरवाओं का स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं अधिक होती है। बिमार पड़ने पर पहले बैगा गुनिया का सहारा लेते है। फिर बाद में अस्पताल जाते है। कई बार तो बीच में अस्पताल जाते जाते ही मरीज दम तोड़ देता है।

13.7 आवागमन के साधान :–

पहाड़ी कोरवा दूरस्थ अंचलों घने जंगलों में निवास करते है जहां आवागमन का समूचित साधन उपलब्ध नहीं होता फलतः इन्हें उपरोक्त सभी समस्याओं का सामना आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक व स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी शामिल होती है।